प्रतिलेखन संख्या 28

उपाध्यक्ष महोदय, रूस में भारत के जो मानचित्र प्रकाशित हुए हैं, उनमें भारत के

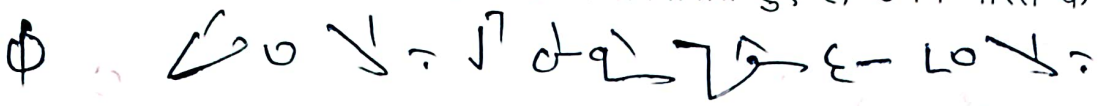

कुछ हिस्से को सही तरीके से नहीं दिखाया गया है। इसको सरकार भी मानती है

और इस विषय पर कोई मतभेद नहीं है। प्रश्न यह है कि अगर किसी देश ने हमारे

देश का गलत मानचित्र प्रकाशित किया है, तो एक सरकार के रूप में भारत

सरकार का जो कर्तव्य है उसने उसको निभाया है या नहीं और अगर निभाया है तो

किस प्रकार से निभाया है। जब भारत सरकार का ध्यान इसमें प्रकाशित उस

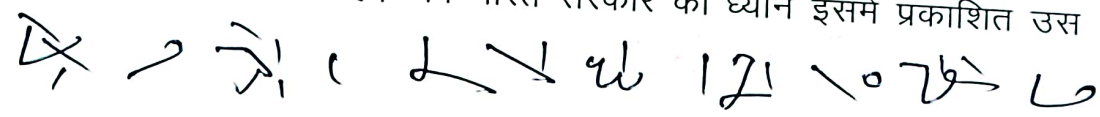

मानचित्र की ओर दिलाया गया, जिसमें हमारे देश के कुछ भाग को गलत ढंग से

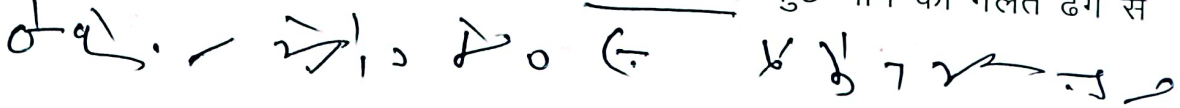

दिखाया गया था तो उसने 1956 में ही, जबकि न तो भारत और चीन की सीमा मा

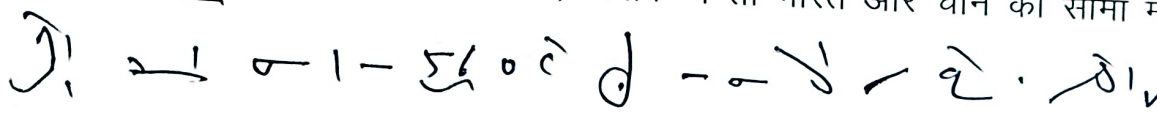

प्रश्न पैदा हुआ था, इस बारे में रूस ने विरोध किया। इसके बाद भारत सरकार ने

लगातार चार बार रूस सरकार से लिखित रूप से विरोध किया कि हमारे मानचित्र

को ठीक से नहीं दिखाया गया है। जिस मानचित्र को लेकर यह चर्चा हो रही है,

जब उसकी ओर भारत का ध्यान गया, तो उसने जून, जुलाई और अगस्त में

लगातार तीन बार, अपने राजदूत के माध्यम से, और रूस के जो अधिकारी हमारे

देश में आए, उनसे बातचीत करके, रूस का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि

उसने इस देश का मानचित्र ठीक नहीं दिखाया है।

प्रश्न यह है कि जिस मानचित्र के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं उसके बारे में हमें

चिंता होनी चाहिए या नहीं। मैं समझता हूँ कि अगर दुनिया का कोई भी देश हमारा

61

मानचित्र सही ढँग से नहीं दिखाता है तो स्वाभाविक रूप से देश को उसके बारे में

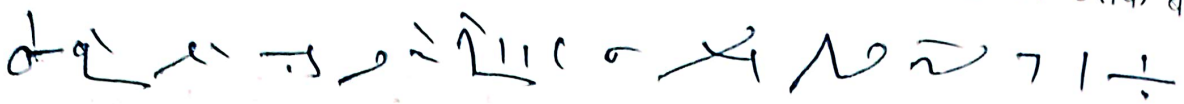

चिंता करनी चाहिए। हम अपने कर्तव्य से नही चूक सकते हैं। लेकिन जहाँ तक

इस चर्चा का संबंध है, मैं माननीय सदस्य की प्रशंसा करता, अगर वह उन समस्त

देशों का जिक्र करते और निंदा करते, जिन्होंने हमारे मानचित्र को गलत ढँग से

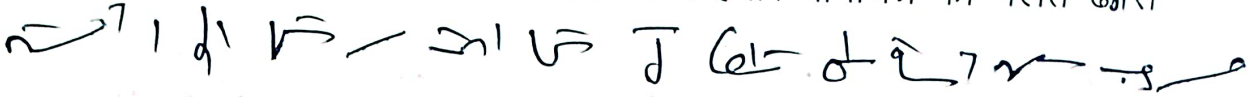

दिखाया है। उदाहरण के लिए पाकिस्तान को शिकायत है उसके मानचित्र को

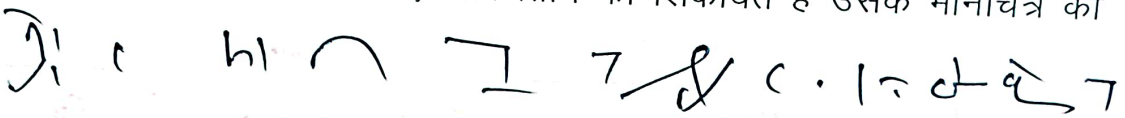

केवल रूस, इराक और मिस्र ने ही नहीं, ताज और मुकुट कहते हुए हैं, जिसे हम

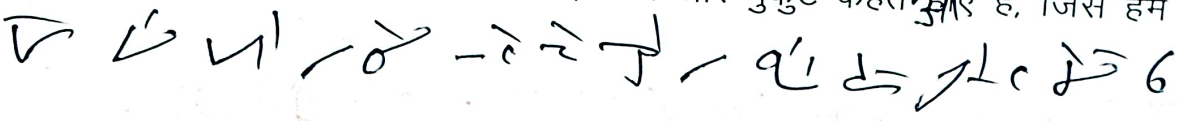

कहते हैं कि वह इस धरती पर हमारा स्वर्ग है उस इलाके को बिल्कुल उनकी दया

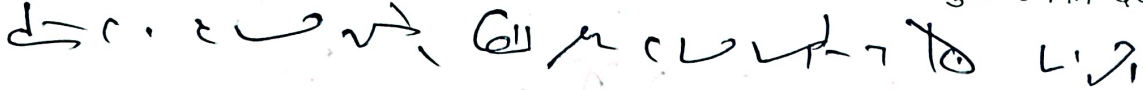

और कृपा पर छोड़ दिया गया है। यह बात उत्साहवर्धक नहीं है।